

भगत नामदेव – सबद ५४
बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥
रागु सारंग, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १२५२

बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥ १॥ रहाउ ॥
आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥
जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥ १॥
आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥
कहत नामदेउ तूँ मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥ २॥ २॥

सार: संपूर्णता का एहसास, यह अनुभूति है कि वास्तव में किसी आवश्यक चीज़ की कमी नहीं है क्योंकि हमारा वास्तविक स्वरूप अस्तित्व से गहराई से जुड़ा हुआ है। अद्वैत की इस अनुभूति में अहं की सीमाएँ मिट जाती हैं और हमें परस्पर स्वाभाविक जुड़ाव का अहसास होता है। संतुष्टि तब चीज़ें जमा करने या बाहरी स्वीकृति पाने से नहीं मिलती, यह इस समझ से आती है कि हम एक ही अखंड वास्तविकता की अभिव्यक्ति हैं। इस जागरूकता से शांति, करुणा और सच्चे जीवन का स्वाभाविक रूप से उदय होता है।

बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥
तुम मेरे साथ बाज़ी क्यों नहीं लगाते, हे माधव, प्रिय सर्वव्यापी शक्ति? यह ऐसी आत्मजागृत चेतना का प्रतीक है जो चंचल भाव से स्वयं को चुनौती देती है कि वह सिद्ध करे कि वह अलग सत्ता हैं।

ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥ १॥ रहाउ ॥
स्वामी से सेवक और सेवक से स्वामी बनने का यह खेल तुम्हारे साथ चलता है। यह अद्वैत की ओर संकेत करता है, भूमिकाएँ उलट जाती हैं फिर भी अंतर्निहित उपस्थिति एक ही रहती है जिससे अलगाव की धारणा विलीन हो जाती है। (१)(विराम)

आपन देउ देहरा आपन आप लगावै पूजा ॥

तुम ही देवता हो, तुम ही मंदिर हो और तुम स्वयं ही पूजा करते हो। यह दर्शाता है कि विषय, वस्तु और संदर्भ सभी, एक ही चेतना की अभिव्यक्तियाँ हैं जो एक ही जागरूकता के भीतर उत्पन्न होती हैं।

जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥ १॥

पानी से ही लहरें उठती हैं और लहरों के भीतर भी पानी ही होता है, अंतर केवल रूप और समझ का है। यह बताता है कि दिखाई देने वाले भेद उसी एक मूल तत्व की अभिव्यक्तियाँ हैं, इसलिए वास्तव में कोई दूसरा या पराया अस्तित्व नहीं है। (१)

आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥

वह स्वयं ही गाता है, स्वयं ही नाचता है और स्वयं ही तुरही बजाता है। यह ब्रह्मांडीय संगीत का प्रतीक है जो अस्तित्व को किसी ऊँच-नीच के क्रम के रूप में नहीं बल्कि ऐसी ऊर्जा के रूप में देखता है जो स्वयं उत्पन्न होती है और सभी भूमिकाएँ निभाती है।

कहत नामदेउ तूँ मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥ २॥ २॥

नामदेव कहते हैं, आप ही मेरे जीवन का आधार हैं। मैं अधूरा हूँ और आप ही वह पूर्णता हैं जिससे मुझे पूर्णता मिलती है। यह अद्वैत के एकत्व के अनुभव और इस बात को पहचानने की ओर इशारा करता है कि हम उस विशाल पूर्णता की एकता का ही एक हिस्सा हैं। (२)(२)

तत्त्व: भगत नामदेव हमें स्मरण कराते हैं कि ऊपर से दिखने वाले अंतर वास्तव में एक ही मूल तत्व की अलग-अलग रूप एवं अभिव्यक्ति हैं। वह बताते हैं कि अलगाव सिर्फ बाहरी रूप-रंग के स्तर पर होता है। विभिन्न नामों, पहचानों, विश्वासों और रूपों की विविधता के नीचे एक सांझी वास्तविकता विद्यमान है जो समस्त अस्तित्व को आपस में जोड़ती है। इस दृष्टि से देखने पर मन में स्वाभाविक रूप से करुणा का भाव जागता है क्योंकि विरोध करने, कमतर आंकने या शोषण करने के लिए

वास्तव में कोई दूसरा नहीं रह जाता । अब विविधता, विभाजन के रूप में नहीं बल्कि एक अविभाज्य संपूर्णता की अनेक अभिव्यक्तियों के रूप में दिखाई देती है ।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com